पाठ्यचर्या विकास MAED-205

इकाई -3 पाठयचर्या विकास- प्रक्रिया एवं सिद्धांत

डॉ मनीषा पंत
शिक्षा शास्त्र विभाग
उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय

परिचय

- पाठयचर्या शिक्षा का एक अभिन्न अंग है, पाठयचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति होती है।
- शिक्षक पाठयचर्या के माध्यम से छात्रों के मानसिक, शारीरिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक, राजनैतिक एवं सामाजिक विकास हेतु प्रयासरत रहता है।
- पाठयचर्या में नवीन अनुभवों एवं पुराने अनुभवों को शामिल किया जाना चाहिए जिसके द्वारा छात्र वर्तमान स्थिति को समझने में सक्षम बन सकें। सही अर्थ में पाठयचर्या ऐसा हो जिसमें सभी शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके, जिससे हमारे राष्ट्र का सर्वांगीण विकास हो ।

पाठयचर्या के उद्देश्य (Aims of Curriculum)

- शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु बालक को तैयार करना।
- छात्रों में ईमानदारी, निष्ठा और उनकी व्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- आवश्यकता अनुसार पाठयचर्या का निर्माण करना।
- विद्यालयों के विषयों और विभिन्न क्रियाओं के बीच के अन्तर को समाप्त करना।

- ऐसे गुणों को बढ़ावा देना जिनसे मनुष्य में मानवता का विकास हो ।
- बालकों को सांस्कृतिक, सभ्यता एवं मूल्यों के बारे में जानकारी प्रदान करना।
- ऐसे वातावरण का निर्माण करना जिसमें बालक नवीन ज्ञान प्राप्त कर सके।
- राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय भावना का विकास करना।
- बालक का सर्वांगीण विकास करना एवं बालक को जीवन उपयोगी बनाना।

पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया

- सर्वप्रथम ध्यान देना होगा कि पाठयचर्या का निर्माण किस कक्षा के लिए किया जा रहा है।
- जिस स्तर के बालकों के लिए पाठयचर्या का निर्माण किया जाना है, उनका पूर्व ज्ञान का स्तर क्या है?
- पाठयचर्या को ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक पक्षों में बांटकर निर्धारण किया जाना चाहिए।

- छात्रों की वर्तमान आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर मनोवैज्ञानिक स्तर पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- समाज, संस्कृति, सभ्यता, राष्ट्रीयता एवं अंतर्राष्ट्रीयता की भावना को ध्यान में रखकर पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया की जानी चाहिए।
- पाठयचर्या के निर्माण में विविध सिद्धान्तों एवं शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर कार्य किया जाना चाहिए।
- पाठयचर्या की प्रक्रिया में तथ्यों, प्रसंगों एवं विचारकों के मतों का वर्णन करना चाहिए।

- पाठयचर्या के निर्माण में वैधता, विश्वसनीयता, मानकीकरण का निर्धारण शैक्षिक उद्देश्यों के अनुरूप होना चाहिए।

- शिक्षक के लिए शिक्षण संकेत का निर्माण करना।

- बालक के सर्वांगीण विकास के लिए पाठयचर्या में पर्याप्त क्रियाओं को स्थान दिलाने के लिए मूल्यांकन पद्धति को अपनाना चाहिए।

- छात्र को सैद्धान्तिक रूप के साथ व्यावहारिक रूप में भी पाठयचर्या बताई जानी चाहिए।

- हमें बालक के सर्वांगीण विकास हेतु पाठयचर्या निर्माण प्रक्रिया में सहयोगात्मक दृष्टि को ध्यान में रखकर कार्य करना चाहिए।

- पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया सरल होनी चाहिए। पाठयचर्या निर्माण प्रक्रिया के उपरान्त ही पाठयचर्या अपने वास्तविक स्वरूप को धारण करती है।

पाठयचर्या का विकास

- छात्रों की वर्तमान आवश्यकता, रुचि किन क्षेत्रों से सम्बंधित है। इसमें छात्रों के मनोवैज्ञानिक पक्षों पर भी ध्यान दिया जाता है। जैसे:- व्यक्तिगत भिन्नता, रुचि, बाल-विकास की अवस्था, परिपक्वता, बुद्धि, सृजनात्मकता आदि।
- पाठयचर्या का प्रकार किस कोटि का होगा। जैसे- क्रिया प्रधान, हस्त-शिल्प प्रधान, विषय प्रधान, व्यवसाय-प्रधान आदि।
- पाठयचर्या निर्माण के विविध सिद्धान्त का अनुपालन तथा तत्संबंधी तथ्यों का चयन करना।

- पाठयचर्या के विषयों में अन्तर्वस्तु के क्रम का निर्धारण करना, प्रायः यह सरल से जटिल की ओर होती है।
- पाठयचर्या के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं का चयन करना।
- पाठयचर्या निर्माण के विविध सिद्धान्त का अनुपालन तथा तत्संबंधी तथ्यों का चयन करना।

पाठयचर्या विकास के प्रमुख सोपान

- शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण।
- निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उपयुक्त अधिगम अनुभवों का चयन।
- अधिगम अनुभवों को प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त अन्तर्वस्तु का चयन।
- अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया की दृष्टि से चयनित अधिगम अनुभवों एवं अन्तर्वस्तु का संगठन।
- सम्पूर्ण प्रक्रिया का उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से मूल्यांकन।

पाठयचर्या निर्माण के आधारभूत सिद्धान्त

- अतीत को जानने या सुरक्षित रखने का सिद्धान्त
- जीवन की उपयोगिता से सम्बन्धित होने का सिद्धान्त
- रचनात्मक एवं सृजनात्मक शक्तियों का सिद्धान्त
- क्रियाशीलता का सिद्धान्त
- नैतिकता एवं उत्तम आदर्शों का सिद्धान्त

- लचीलेपन का सिद्धान्त
- विकास एवं प्रगतिशीलता की प्रक्रिया का सिद्धान्त
- अनुभवों की पूर्णता का सिद्धान्त
- खाली समय के सदुपयोग का सिद्धान्त
- संस्कृति एवं सभ्यता का सिद्धान्त
- प्रजातन्त्रात्मक भावना के विकास का सिद्धान्त
- नवीनता की खोज का सिद्धान्त

- सह-सम्बन्ध का सिद्धान्त
- सर्वांगीण विकास का सिद्धान्त
- सामुदायिक जीवन से सम्बन्ध का सिद्धान्त
- सन्तुलन का सिद्धान्त
- शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का सिद्धान्त

THANKS